(2) स्वे वेदार्थम् अविदुः, तान् (स्वान्) हरिः वेदार्थ अवेदयत्। अपने पक्ष के लोगों ने वेदार्थ जाना, उन्हें हरि ने वेदार्थ समझाया। इसमें बुद्धि अर्थवाली विद् धातु का णिच् से पूर्व का कर्ता 'स्वे' ण्यन्त 'अवेदयत' इस क्रिया का कर्म होकर 'स्वान्' होजाता है।

(3) देवा अमृतम् अश्नन् (पिया) तान् (देवान्) हरिः अमृतम् आशयत् (देवताओं ने अमृत पिया, उन देवों को हरि ने अमृत पिलाया) इसमें भक्षणार्थक अश् धातु का णिच् से पूर्व अवस्था का कर्ता देवाः 'आशयत' ण्यन्त अवस्था में आकार 'देवान्' हो जाता है।

(4) विधिः वेदम् अध्यैत, तं (विधिम्) हरिः वेदम् अध्यापयत्। विधि (ब्रह्मा) ने वेद पढ़ा, उस ब्रह्मा को हरि ने वेद पढ़ाया। यहाँ शब्दकर्मक अध्यैत क्रिया का णिच् से पूर्व अवस्था का कर्ता विधि- इस ण्यन्त अवस्थावाली क्रिया का कर्म होकर द्वितीयांत 'विधिम्' होजाता है।

(5) पृथ्वी सलिले आस्त (ठहरी) तां (पृथ्वीम्) हरिः सलिले आसयत् (ठहराया) पृथ्वी जल पर ठहरी उसे हरि ने जल पर ठहराया। इसमें अकर्मक 'आस्त' क्रिया का 'णिच्' से पूर्व अवस्था का कर्ता 'पृथ्वी' ण्यंत 'आसयत' इस अवस्था में